कीन्स का रोजगार सिद्धांत

(Keynesian Theory of Employment)

◆ **भूमिका (Introduction)**

- प्राचीन (Classical) अर्थशास्त्रियों ने **बेरोजगारी की समस्या पर विशेष ध्यान नहीं दिया**
-
- उनका मानना था कि:

👉 अर्थव्यवस्था में **Full Employment** स्वाभाविक स्थिति है

❗ लेकिन कीन्स ने इस विचार को गलत बताया

◇ कीन्स का दृष्टिकोण

👉 ***John Maynard Keynes*** के अनुसार:

- अर्थव्यवस्था में हमेशा **पूर्ण रोजगार (Full Employment)** नहीं होता
- वास्तविकता में **बेरोजगारी (Unemployment)** मौजूद रहती है
- इसलिए, जरूरी है कि हम समझें:

👉 **रोजगार का स्तर कैसे निर्धारित होता है**

◆ कीन्स की पुस्तक

- **कीन्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक:**

👉 *"General Theory of Employment, Interest and Money"* में

- रोजगार का **नया सिद्धांत (New Theory of Employment)** प्रस्तुत किया

📊 रोजगार का निर्धारण (Determination of Employment)

📌 मुख्य विचार

👉 अर्थव्यवस्था में रोजगार का स्तर निर्भर करता है:

⭐ **प्रभावपूर्ण मांग (Effective Demand) पर**

🔹 प्रभावपूर्ण मांग?

- सामान्य भाषा में:

👉 **मांग (Demand)** का अर्थ है इच्छा (Desire)

लेकिन कीन्स के अनुसार:

☞ केवल इच्छा नहीं, बल्कि

☞ **वह मांग जो वास्तविक खर्च (Expenditure) में बदल जाए**

✓ जब लोग वस्तुएँ खरीदने के लिए पैसा खर्च करते हैं

✓ तब वह **प्रभावपूर्ण मांग (Effective Demand)** बनती है

◆ प्रभावपूर्ण मांग का महत्व

👉 अर्थव्यवस्था में:- रोजगार के अलग-अलग स्तरों पर **मांग और पूर्ति (Demand & Supply)** बराबर होती है

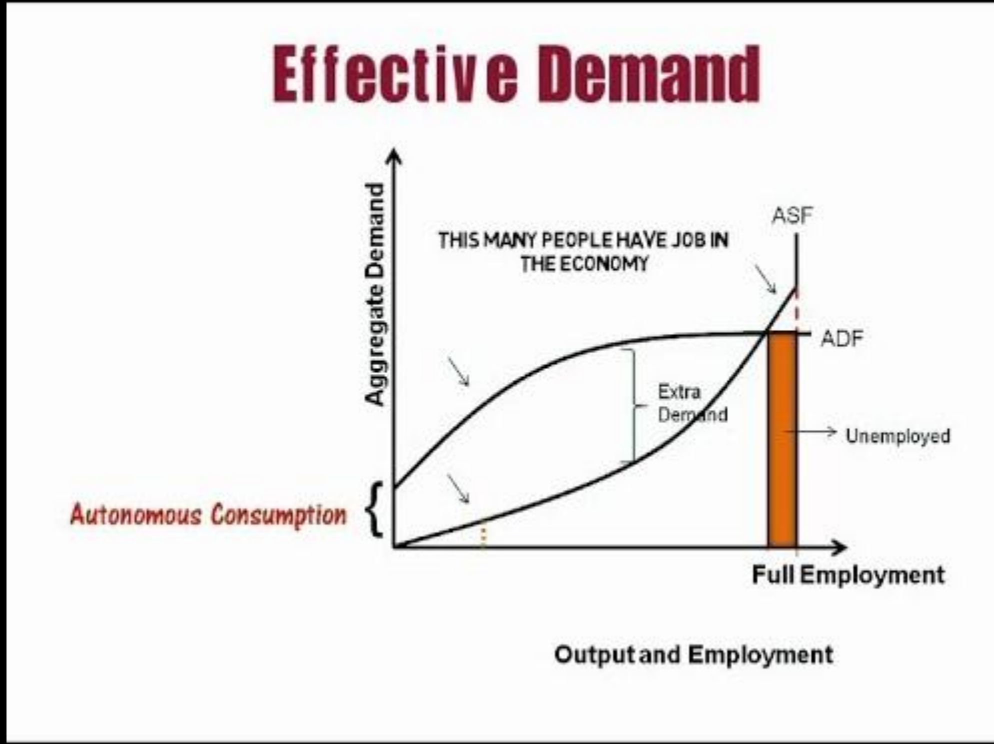

📍 जिस बिंदु पर:

👉 **समग्र मांग = समग्र पूर्ति**

👉 वही बिंदु **Effective Demand** कहलाता है

कीन्स के अनुसार यह निर्भर करता है:

1️⃣ **समग्र मांग फलन (Aggregate Demand Function - ADF)**

2️⃣ **समग्र पूर्ति फलन (Aggregate Supply Function - ASF)**

📊 1. समग्र मांग फलन (ADF)

📌 अर्थ (Meaning)

- यह दिखाता है:

👉 *अलग-अलग रोजगार स्तर पर*

👉 ***Expected Income / Expected Sales** कितनी होगी*

✓ इसे **प्रत्याशित आय (Expected Proceeds)** भी कहते हैं

🔹 आसान भाषा में:

- जितना अधिक रोजगार होगा
- उतना अधिक उत्पादन होगा
- और उतनी ही **मांग (Demand)** की उम्मीद होगी

📋 समग्र मांग अनुसूची (Aggregate Demand Schedule)

रोजगार स्तर (लाख में)	प्रत्याशित विक्रय आय (करोड़ में)
2.0	20
2.5	21
3.0	22
3.5	23
4.0	24
4.5	25
5.0	26

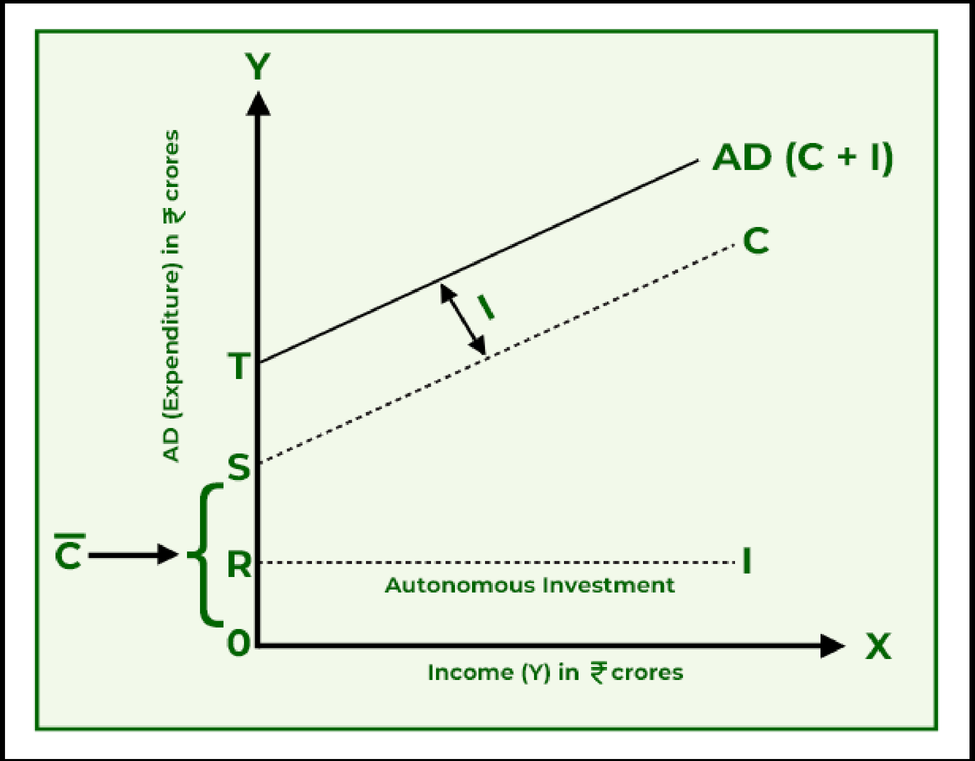

📌 निष्कर्ष (Conclusion from Table)

👉 जैसे-जैसे रोजगार बढ़ता है

👉 **प्रत्याशित आय (ADF)** भी बढ़ती है

📈 2. समग्र पूर्ति फलन (ASF)

📌 **अर्थ (as per context)-** 👉

"किसी निश्चित रोजगार स्तर पर उत्पाद को बेचकर प्राप्त होने वाली न्यूनतम राशि, जिसे उत्पादक स्वीकार करते हैं, समष्टि पूर्ति कहलाती है।"

- यह बताता है:

  👉 किसी रोजगार स्तर पर

  👉 उत्पादन करने के लिए

  आवश्यक आय (Required Income) कितनी होनी चाहिए

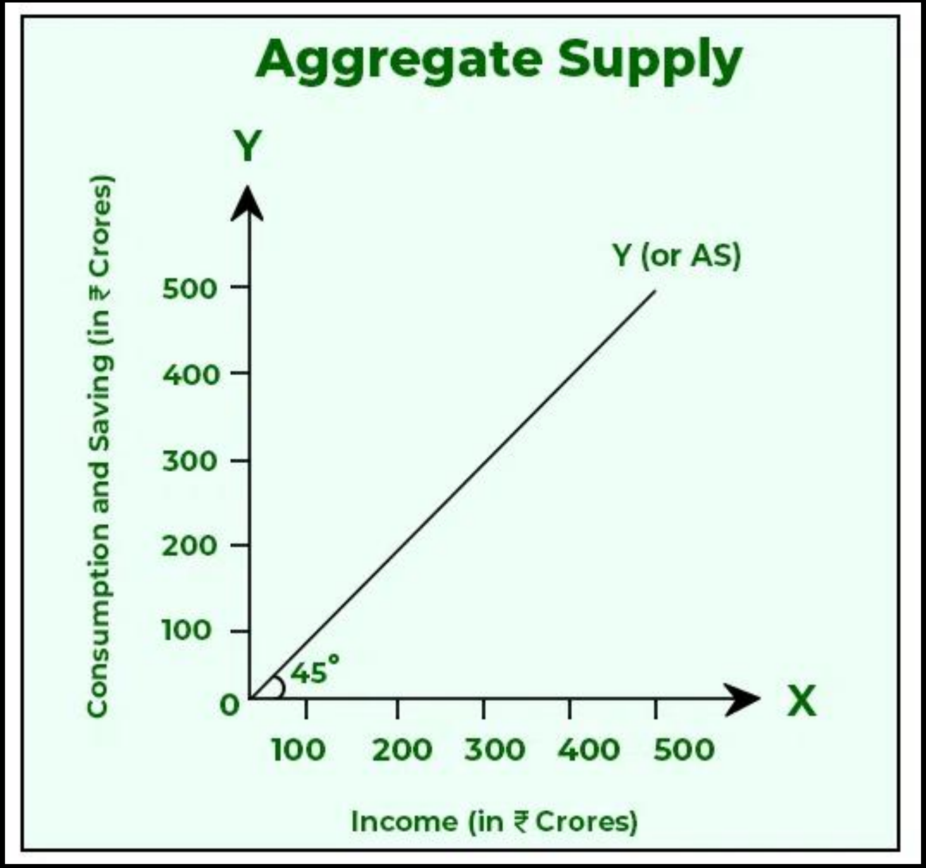

प्रभावपूर्ण मांग अथवा रोजगार के सन्तुलन स्तर का निर्धारण

(Equilibrium of Employment)

"जहाँ ADF = ASF होता है, वही रोजगार का संतुलन स्तर होता है।"

🔍 **Explanation:**

- उस point पर:
  - Firms को expected income = cost
  - इसलिए production stable

👉 यही point = **Effective Demand**

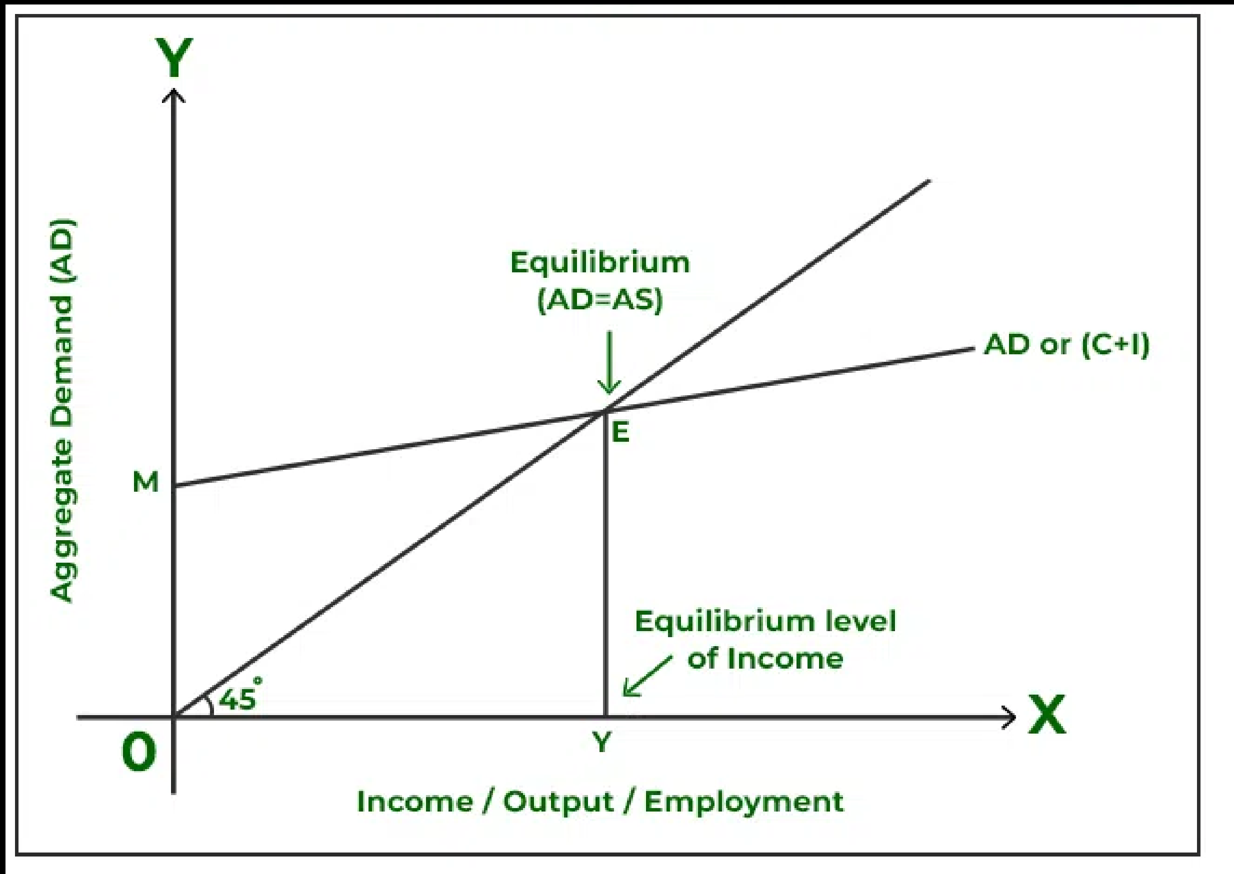

🔥 दो स्थितियाँ:

✔ (1) Full Employment Equilibrium

- जब equilibrium maximum employment पर हो
-

✔ (2) Underemployment Equilibrium (Most Important)

- जब equilibrium full employment से पहले हो

👉 Keynes का मुख्य योगदान:

Economy underemployment पर भी स्थिर रह सकती है

कीन्स का रोजगार सिद्धान्त

प्रभावपूर्ण मांग के निर्धारण (Determination of Effective Demand)

कीन्स के अनुसार समय पूर्ति क्रिया को स्थिर माना गया है (क्योंकि अल्पकाल में, लागतों में परिवर्तन नहीं किया जा सकता)। प्रभावपूर्ण मांग (अथवा रोजगार) का निर्धारण ADF के द्वारा किया जाता है।

प्रभावपूर्ण मांग (E.D.) = कुल उत्पादन (Total Output) = कुल राष्ट्रीय आय (Total National Income) = कुल राष्ट्रीय व्यय (Total National Expenditure)

$$E.D. = Y = C + I + G$$

उपभोग व्यय (Consumption Expenditure)

निजी उपभोग व्यय आय तथा उपभोग प्रवृत्ति पर निर्भर करता है। उपभोग प्रवृत्ति समाज की आदतों, परम्पराओं, रीति-रिवाजों तथा सामाजिक ढांचे पर निर्भर करती है। सामाजिक ढांचा आय के वितरण को निर्धारित करता है। यह सभी तत्व अल्पकाल में स्थिर रहते हैं। यही कारण है कि अल्पकाल में उपभोग प्रवृत्ति को स्थिर माना जाता है।

निवेश व्यय

निवेश क्रिया या निवेश व्यय प्रभावपूर्ण मांग का दूसरा महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व है। निजी निवेश पूंजी की सीमांत दक्षता (MEC) तथा ब्याज दर पर निर्भर करता है।

पूंजी की सीमांत दक्षता

पूंजी परिसम्पत्तियों की एक अतिरिक्त इकाई से अपेक्षित भावी आय से है। MEC सम्भावित प्राप्ति तथा परिसम्पत्ति लागत पर निर्भर करती है। पूंजी की परिसम्पत्तियों की पूर्ति कीमत से तो उद्यमी अनभिज्ञ रहता है, परन्तु सम्भावित प्राप्ति प्रत्याशाओं पर निर्भर करती है, इसे बाजार में निवेश तथा कुछ हद तक ब्याज दर प्रभावित करती है।

इस प्रकार, पूंजी की सीमांत दक्षता को उद्यमी द्वारा परिवर्तित नहीं किया जा सकता।

ब्याज दर

मुद्रा की मांग (तरलता अधिमान) तथा मुद्रा की पूर्ति पर निर्भर करती है। मुद्रा की पूर्ति केन्द्रीय बैंक द्वारा मौद्रिक एवं साख नीतियों के माध्यम से निर्धारित की जाती है। मुद्रा की मांग का सम्बन्ध आय तथा तरलता अधिमान से होता है। तरलता अधिमान के तीन हेतु होते हैं–(1) लेन-देन हेतु (2) सावधानी हेतु (3) सट्टा हेतु।

सरकारी व्यय

यदि अब तक निजी उपभोग और निजी निवेश व्यय से पूर्ण रोजगार का स्तर प्राप्त नहीं होता है तो आय एवं रोजगार में वृद्धि के लिए प्रभावपूर्ण मांग के तीसरे महत्वपूर्ण निर्धारक सरकारी व्यय को बढ़ाया जाना चाहिए।

गुणक प्रभाव (Investment Multiplier)

कीन्स के रोजगार सिद्धान्त में गुणक प्रक्रिया का विशेष महत्व है। कीन्स का विचार था कि निवेश अथवा व्यय में वृद्धि से आय में गुणक वृद्धि होती है।

$$\Delta Y = K \cdot \Delta I$$

जहाँ, ΔY = आय में वृद्धि, ΔI = निवेश में वृद्धि, K = निवेश गुणक

गुणक का आकार सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (mpc) पर निर्भर करता है। mpc के अधिक होने पर गुणक का मूल्य अधिक तथा mpc के कम होने पर गुणक का मूल्य भी कम होता है।

$$K = 1 / (1 - mpc)$$

$$= 1 / mps$$

कीन्स का रोजगार सिद्धान्त

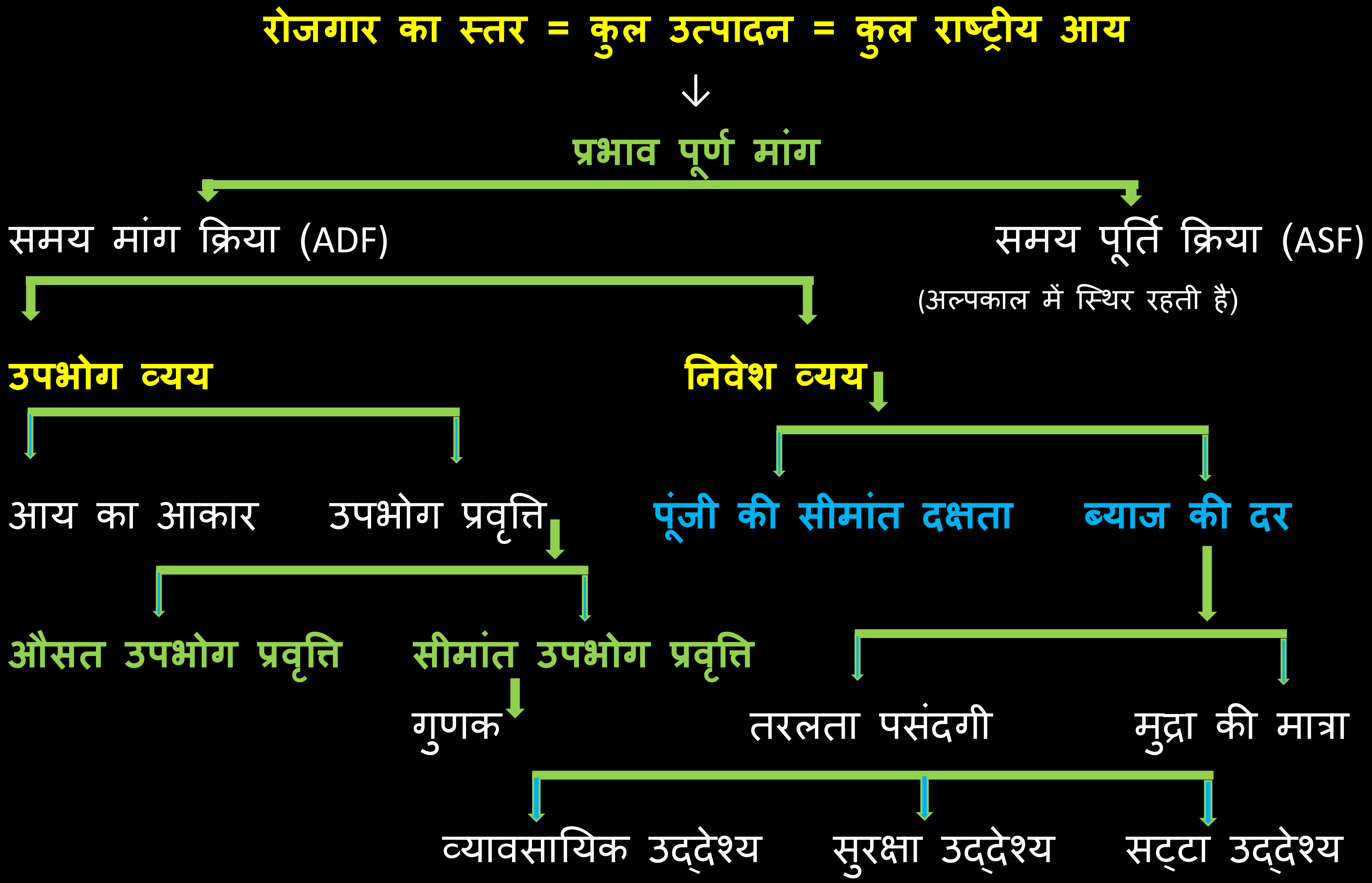

कीन्स के रोजगार सिद्धान्त के निष्कर्ष–

1. रोजगार का स्तर उत्पादन की मात्रा पर निर्भर करता है और इस प्रकार, रोजगार की मात्रा प्रभावपूर्ण मांग पर निर्भर करती है।
2. प्रभावपूर्ण मांग समय मांग क्रिया (ADF) तथा समय पूर्ति क्रिया (ASF) द्वारा निर्धारित होती है।
3. समय पूर्ति क्रिया जो लागत से सम्बन्धित होती है, अल्पकाल में स्थिर रहती है। अतः प्रभावपूर्ण मांग समय मांग क्रिया द्वारा निर्धारित होती है।
4. समय मांग क्रिया उपभोग व्यय तथा निवेश व्यय द्वारा प्रभावित होती है।
5. उपभोग व्यय, आय के आकार तथा उपभोग प्रवृत्ति पर निर्भर करता है।
6. उच्च उपभोग प्रवृत्ति रोजगार के लिए अधिक उपयुक्त होती है।
7. क्योंकि उपभोग प्रवृत्ति अल्पकाल में स्थिर रहती है, अतः रोजगार के निर्धारण में निवेश की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण होती है।
8. निवेश क्रिया दो तत्वों द्वारा निर्धारित होती है–पूंजी की सीमांत दक्षता तथा ब्याज दर।

9. पूंजी की सीमांत दक्षता दो तत्वों से प्रभावित होती है–(i) पूंजी परिसम्पत्ति की पूर्ति कीमत तथा (ii) अपेक्षित प्राप्ति।

10. ब्याज की दर दो तत्वों द्वारा प्रभावित होती है–(i) मुद्रा की मात्रा, तथा (ii) तरलता अधिमान।

11. तरलता अधिमान तीन उद्देश्यों से निर्धारित होता है–(i) व्यापारिक अथवा लेन-देन उद्देश्य, (ii) सतर्कता अथवा सुरक्षा उद्देश्य, (iii) सट्टा उद्देश्य।

12. विनियोग अथवा निवेश पर ब्याज दर की अपेक्षा पूंजी की सीमांत दक्षता का अधिक प्रभाव पड़ता है।

13. गुणक क्रिया के फलस्वरूप प्राथमिक निवेश से आय में कई गुना वृद्धि हो जाती है।

14. विनियोग में वृद्धि से उत्पादन, रोजगार और आय में वृद्धि होगी तथा प्रभावपूर्ण मांग भी बढ़ेगी। इस प्रकार रोजगार वृद्धि के लिए उपभोग व्यय एवं निवेश व्यय में वृद्धि की जानी चाहिए।

15. कीन्स का रोजगार सिद्धान्त अल्पकालीन परिस्थितियों पर आधारित है और अल्पकाल में लागत स्थिर रहती है।

प्रभावपूर्ण मांग का महत्व (IMPORTANCE OF EFFECTIVE DEMAND)

(1) रोजगार का निर्धारण (Determinant of Employment)—प्रभावपूर्ण मांग के बढ़ने से रोजगार बढ़ता है तथा घटने से रोजगार घटता है।

(2) **पूर्ण रोजगार की धारणा का खण्डन (Repudiation of Full Employment Thesis)—** से के बाजार के नियम (Say's Law of Market) के अनुसार प्रत्येक आपूर्ति अपनी मांग स्वयं उत्पन्न करती है, परन्तु कीन्स ने इसका खण्डन किया और कहा कि यह आवश्यक नहीं कि उत्पादित वस्तुओं की पूरी मांग उत्पन्न हो।

(3) **विनियोग की भूमिका में महत्व (Importance in the Role of Investment)**—प्रभावपूर्ण मांग के निर्धारण में विनियोग का विशेष महत्व है। उपभोग व्यय तथा विनियोग व्यय दोनों मिलकर प्रभावपूर्ण मांग को प्रभावित करते हैं, परन्तु अल्पकाल में उपभोग व्यय स्थिर रहता है, इसलिए विनियोग व्यय में वृद्धि करना आवश्यक होता है।

(4) **कीन्स की प्रभावपूर्ण मांग की व्याख्या–सम्पन्नता के बीच गरीबी का विरोधाभास**—अल्पकाल में प्रभावपूर्ण मांग कुल आय (ADF) से सम्बन्धित होती है। कुल मांग फलन के दो घटक होते हैं–उपभोग व्यय एवं विनियोग व्यय।

प्रो. कीन्स के रोजगार के सिद्धान्त का महत्व

(I) सैद्धान्तिक महत्व

(1) **समष्टिगत व्याख्या**–प्रो. कीन्स ने पूरे अर्थतंत्र को ध्यान में रखकर रोजगार की व्याख्या की।

(2) **सामान्य सिद्धान्त**–कीन्स का सिद्धान्त रोजगार के सभी स्तरों की व्याख्या करता है।

(3) **अल्पकालीन सन्तुलन की व्याख्या**–उन्होंने बताया कि अल्पकाल में न्यून रोजगार सन्तुलन भी सम्भव है।

(4) **विनियोग का महत्व**–उन्होंने विनियोग को रोजगार निर्धारण का प्रमुख तत्व माना।

(5) **मौद्रिक सिद्धान्त का समन्वय**–उन्होंने मुद्रा तथा रोजगार के बीच सम्बन्ध स्थापित किया।

(6) **गुणक सिद्धान्त की व्याख्या**–गुणक सिद्धान्त को स्पष्ट किया।

(7) **गतिशील तत्व का विवेचन**–उन्होंने अर्थव्यवस्था को गतिशील माना।

(II) व्यावहारिक महत्व

(1) अर्थव्यवस्था में लागू होना–कीन्स के विचारों को व्यापक रूप से अपनाया गया।

(2) मजदूरी में कमी और रोजगार–कीन्स ने मजदूरी में कमी के सिद्धान्त का विरोध किया।

(3) राजकीय हस्तक्षेप–सरकार के हस्तक्षेप को आवश्यक बताया।

(4) से के नियम का विरोध–कीन्स ने से के नियम का खण्डन किया।

कीन्स के रोजगार सिद्धान्त की आलोचना
(CRITICISM OF KEYNESIAN EMPLOYMENT THEORY)

(1) **सामान्य सिद्धान्त नहीं**–यह प्रत्येक देश एवं प्रत्येक समय पर लागू नहीं होता।

(2) **अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित**–इसमें पूर्ण प्रतियोगिता आदि मान्यताएं अवास्तविक हैं।

(3) **बेरोजगारी का विस्तृत रूप नहीं**–केवल चक्रीय बेरोजगारी पर ध्यान दिया गया है।

(4) **बचत का समुचित विश्लेषण नहीं**–बचत और निवेश के सम्बन्ध को पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं किया।

(5) **प्रभावपूर्ण मांग और रोजगार में सीधा सम्बन्ध नहीं**–दोनों के बीच अन्य कारकों का प्रभाव भी होता है।

(6) **विनियोग पर अधिक बल**–उपभोग की भूमिका को कम महत्व दिया गया।

(7) **दीर्घकालिक विश्लेषण का अभाव**–यह अल्पकालीन सिद्धान्त है।

(8) **सिद्धान्त व्यावहारिक नहीं**–कुछ परिस्थितियों में लागू नहीं होता।

(9) **केवल समष्टि दृष्टिकोण**–सूक्ष्म पहलुओं की उपेक्षा की गई।